शिक्षक शिक्षा का सुनहरा अवसर अब हिंदी विश्वविद्यालय में

वर्धा, 16 मई 2016: शिक्षा का औपचारिक हस्तक्षेप प्रत्येक व्यक्ति के अनुभवों को सवंर्धित करता है। शिक्षक, अनुभव संवर्धन की इस प्रक्रिया के सशक्त माध्यम होते हैं। शिक्षक बनना अपने आप में एक चुनौती है जो आपको सर्जन करने, दूसरों के लिए विकास का रास्ता बनाने, स्वयं और विद्यार्थियों की क्षमताओं के प्रस्फुटन करने का अवसर देता है। इसी कारण वर्तमान में बहुत से युवा अपने लिए शिक्षण व्यवसाय का चुनाव करते हैं। शिक्षक बनने के लिए सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा अनिवार्य है। ऐसे युवक और युवती जो शिक्षक बनना चाहते हैं, उनके लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के नवाचार प्रेरित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में प्रवेश का सुअवसर उपलब्ध कराता है। विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ द्वारा बी.एड., बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत), एम.एड., एम.फिल. और पी.एचडी. पाठ्यक्रमों में प्रवेश की प्रक्रिया प्रारंभ की जा चुकी है। बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी का 50 प्रतिशत अंक के साथ स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इसी प्रकार बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत) पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी को 55 प्रतिशत अंकों के साथ परास्नातक परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। एम.एड. के लिए 50 प्रतिशत अंकों के साथ बी.एड./ बी.एल.एड./ बी.ए.-बी.एड./बी.एससी.-बी.एड. की परीक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। एम.फिल और पी.एच.डी. के लिए 55 प्रतिशत अंकों के साथ एम.ए.(शिक्षा) या एम.एड. परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। बी.एड., बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत) और एम.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश के 50 सीटें निर्धारित है. एम.फिल में 20 और पी.एच.डी. में 7 सीटें निर्धारित है.

इन पाठ्यक्रमों का ढाँचा इस प्रकार रखा गया है कि अध्येता कक्षा में अध्ययन के साथ क्षेत्र कार्यों के माध्यम से शिक्षण की प्रक्रिया की गहन समझ को विकसित करेंगे। प्रत्येक विषयपत्र में व्यावहारिक और रूचिकर क्षेत्रकार्य रखे गए हैं। यहाँ प्रत्येक अध्येता को सूचना प्रौद्योगिकी और व्यक्तित्व विकास कौशल की कार्यशाला में सहभागिता का अवसर मिलता है जो उनकी नैसर्गिक प्रतिभा को विकसित करता है। शिक्षा विद्यापीठ का समृद्ध पुस्तकालय और कम्प्यूटर प्रयोगशाला स्वाध्याय का अवसर

उपलब्ध कराती है। हिंदी विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ के अध्ययन परिवेश के विषय में विगत वर्ष के बी.एड. के छात्र गुलशन बताते हैं कि उन्हें शिक्षा विद्यापीठ द्वारा बी.एड. स्तर पर ही अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता का अवसर मिला। इसी प्रकार विभाग के शोधछात्र रजनीश अग्रहरि और ऋषिकेश बहादुर ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक शोधार्थी के शोधकार्य में सहयोग करते हैं। बी.एड. की छात्रा मधुमिता ओझा ने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि उन्हें शिक्षा विद्यापीठ के द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी से मिलने और शिक्षक शिक्षा की चुनौतियों पर विचार रखने का मौका मिला। बी.एड. के ही विद्यार्थियों कुमार सौरभ, दयाशंकर, प्रीति, चंचल और दीपमाला ने शिक्षा विद्यापीठ द्वारा आयोजित गतिविधियों जैसे- विज्ञान दिवस, महिला दिवस, मातृभाषा दिवस के आयोजनों की सराहना की और बताया कि इन कार्यक्रमों ने उनमें अभिव्यक्ति क्षमता का विकास किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र शिक्षा विद्यापीठ की योजनाओं को लेकर आशान्वित हैं। उन्होंने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय का सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम भारतीय परिवेश में शिक्षण दक्षताओं के साथ नेतृत्व व प्रबंधन की क्षमता से युक्त शिक्षकों का विकास करेगा। शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा नए सत्र में विद्यार्थियों को प्रवेश का आमंत्रण देते हुए कहते हैं कि शिक्षा विद्यापीठ में उनका अनुभव अनूठा रहेगा। शिक्षा विद्यापीठ उनकी सृजन क्षमताओं के विकास में पूर्ण सहयोग प्रदान करेगा। प्रो झा ने भावी योजनाओं को साझा करते हुए बताया कि आगामी सत्र में विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति की विधाओं-अभिनय, गायन, वादन में विशेषज्ञता का अवसर भी प्रदान किया जाएगा। बी.एड., बी.एड.-एम.एड. (एकीकृत) और एम.एड. के स्तरों पर परियोजना कार्य, क्षेत्र अध्ययन आदि के माध्यम से शोध की दक्षताओं का विकास भी किया जाएगा।